डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, अक्टूबर, 2020
वर्षः 03, अंक–12

रिपोर्टिंग में सावधानी बरतने की जरुरत है : डॉ0 कपूर 03

महामारी में सावधानी ही सुरक्षा कवच है : कुलपति 04

नई शिक्षा नीति भारत को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगीः कुलपति

नई शिक्षा नीति में भारतीयता की सम्पूर्ण झलक मिलती है : प्रो0 सिंघल

नई शिक्षा नीति से एकीकरण की भावना का विकास होगा : प्रो0 देशमुख

नई शिक्षा नीति का उद्देश्य प्रतिभाओं का विकास करना है : प्रो0 यादव

19 सितम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आई0क्यू0ए0सी0 एवं इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी के संयुक्त संयोजन में 'नई शिक्षा नीतिः एक व्यापक विमर्श' विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया।

वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि देश की नई शिक्षा नीति इस बात का प्रमाण है कि पूर्व की जो शिक्षा नीतियां पूर्व में थीं, वे जनआकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पाई है। नई शिक्षा नीति भारत को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगी।

कुलपति ने कहा कि भारत का युवा अत्यधिक ऊर्जावान व प्रतिभाशाली है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि नई शिक्षा नीति इसका शत–प्रतिशत उपयोग करने में सक्षम होगी। कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि शिक्षा व्यवस्था किसी भी देश की उन्नति का सूचकांक होती है। यह शिक्षा नीति इसलिए भी उत्तम मानी जा सकती है कि इसमें प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक शोध को वरीयता प्रदान की गई है। कुलपति ने कहा कि नई शिक्षा नीति में अपार संभावनाओं के साथ कुछ चुनौतियां भी है। इसमें 27 मुख्य बिन्दुओं को शामिल किया गया है। इनमें प्राथमिक स्तर से उच्च शिक्षा के बिन्दुओं को उचित रूप से जगह दी गई है।

कुलपति प्रो0 रविशंकर ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति से शिक्षा के क्षेत्र में बहुप्रतीक्षित परिवर्तन और सुधार आयेगा। निश्चय ही यह भावी पीढ़ी को ऐसा प्रशिक्षण प्रदान करने में सक्षम हो सकेगी जो आने वाले समय में भारत को विश्वगुरू का दर्जा दिला सके।

वेबिनार के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षक महासंघ के अध्यक्ष एवं राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के पूर्व कुलपति प्रो0 जे0पी0 सिंघल ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति मात्र एक दस्तावेज नहीं है बल्कि भारत की एक दृष्टि है। उन्होंने कहा कि पूर्व की तुलना में आधुनिक समाज में कई परिवर्तन आए हैं, परिणाम स्वरूप पूर्व की शिक्षा नीतियां आधुनिक समाज के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पा रही थी। ऐसी स्थिति में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अस्तित्व में आना स्वभाविक था। इस शिक्षा नीति में भारतीयता की सम्पूर्ण झलक मिलती है।

प्रो0 सिंघल ने कहा कि इस नीति में जिस प्रकार वोकेशनल एजुकेशन को मुख्य धारा की शिक्षा से जोड़ा गया है, वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। छठवीं कक्षा से ही विद्यार्थियों को कौशल शिक्षा दी जायेगी।

शोध को एक संस्कृति के रूप में विकसित करने पर विशेष बल दिया गया है। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति से भारत पुनः शिक्षा के क्षेत्र में वही प्रभुत्व स्थापित करेगा जो तक्षशिला के युग में था।

विशिष्ट अतिथि के रूप में मुम्बई विश्वविश्वद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 संजय देशमुख ने कहा कि हमारे देश में गुरुकुल की परम्परा थी उसे आज हम फिर से स्थापित करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति में जिस तरह ओपेन बाउंड्री प्रणाली का पालन किया गया है, यह दूरगामी निर्णय साबित होगा। शिक्षा का उद्देश्य मात्र रोजगार उपलब्ध कराना नहीं होना चाहिए बल्कि विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण भी होना चाहिए। नई शिक्षा नीति में इस तथ्य का ध्यान रखा गया है। प्रो0 देशमुख ने कहा कि भारत संसार का सबसे युवा राष्ट्र है जो भारत की सबसे बड़ी खूबी है। इस नई शिक्षा नीति से शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग, पारदर्शिता और एकीकरण की भावना का विकास होगा। जो निकट भविष्य में देश के लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

राजऋषि भर्तहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर के प्रो0 जे0पी0 यादव ने कहा कि नई शिक्षा नीति में कई बड़े बदलाव किए गये है। अन्वेषण, तार्किकता, नैतिकता, चरित्र निर्माण भारतीय मूल्यों से जुड़ी शिक्षा, विश्व कल्याण, राष्ट्र निर्माण, डिजिटल शिक्षा पर बल सहित अन्य तथ्यों को प्राथमिकता दी गई है। उन्होंने कहा कि इस नीति से इच्छित परिणाम की प्राप्ति सरकारों की राजनीतिक इच्छा शक्ति, आपसी सहयोग, उपलब्ध संसाधनों की स्थिति एवं आमजन के सहयोग से ही सम्भव है। भारत में नीतियां हमेशा से ही अच्छी बनती आई है। परन्तु व्यवहार में नीति का अनुपालन बड़ी चुनौती रहती है। अंत में उन्होंने कहा कि शिक्षा नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों में प्रतिभाओ का विकास करना है।

टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, मुम्बई के पूर्व निदेशक प्रो0 अब्दुल शाह ने कहा कि नई शिक्षा नीति दूरगामी परिणाम देने वाली नीति है। परन्तु बहुत कुछ इस नीति को लागू की जाने वाली प्रक्रिया पर निर्भर करेगा। उन्होंने कहा कि देश की शिक्षा पद्धति देश के विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं और आधुनिक युग में विकास काफी हद तक उच्च शिक्षा पर निर्भर करता है, शिक्षा गुणवत्तापरक होनी चाहिए। उन्होंने नई शिक्षा नीति को एक महत्वाकांक्षी शिक्षा नीति बताया। भारतीय विश्वविद्यालयों का अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान देना इस नीति में सबसे नया है।

वेबिनार के संयोजक प्रो0 एस0एन0 शुक्ल ने बताया कि देश की नई शिक्षा नीति को जनजन तक पहुंचाने के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 सिंह के मागदर्शन में इस तरह के वेबिनार का आयोजन कर अधिक से अधिक लोगों को जागरूक किया जा रहा है। आने वाले समय में इस शिक्षा नीति के कियान्वयन से सुखद परिणाम दिखाई देंगे। प्रो0 शुक्ल ने बताया कि अब तक नई शिक्षा नीति पर कई वेबिनार कराये जा चुके है जिनका लाइव स्ट्रीमिंग भी किया गया है। देश की नई शिक्षा नीति में भारतीय संस्कृति की जितनी विशेषताएं है उन सभी को इसमें समाहित किया गया है। आने वाले 15 वर्षों में यह शिक्षा नीति नये रूप में देखने को मिलेगी।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की वंदना के साथ किया गया। उसके पश्चात विश्वविद्यालय के कुलगीत की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम का संचालन प्लेसमेंट सेल की निदेशक डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव ने किया। धन्यवाद ज्ञापन विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ ने किया।

वेबिनार में प्रतिभागियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर विशेषज्ञों ने दिया। आई0क्यू0ए0सी0 निदेशक डॉ0 नरेश चौधरी एवं प्रो0 रमापति मिश्र ने रिपोर्टियर प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों सहित अन्य प्रांतों से बड़ी संख्या में प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

बापू एवं शास्त्री के आदर्शों पर चल कर ही समाज और देश का भला होगा : कुलपति

02 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 151 वीं जयंती पर स्वच्छता एवं पर्यावरण जागरूकता के लिए पदयात्रा का आयोजन किया गया। परिसर में स्थापित महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने पदयात्रा को रवाना किया। पदयात्रा विश्वविद्यालय परिसर से नाका हनुमानगढ़ी होते हुए विश्वविद्यालय परिसर में समाप्त हुई। पदयात्रा में महात्मा गांधी के जीवन आदर्शों को आत्मसात करने के लिए जन–जागरण अभियान के तहत विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारीगण ने सोशल डिस्टेंसिंग के साथ हिस्सा लिया। पदयात्रा की समाप्ति पर कुलपति प्रो0 सिंह द्वारा परिसर में स्थापित सरदार वल्लभभाई पटेल एवं डॉ0 राममनोहर लोहिया की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर वृक्षारोपण किया गया।

परिसर में स्थित सरदार वल्लभभाई पटेल प्रशासनिक भवन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं देश के द्वितीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती सोशल डिस्टेंसिंग के साथ मनाई गई। इस अवसर पर कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि आज देश के दो महान सपूतों का जन्मदिन है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री इस देश की आत्मा थे। गरीबों के दिल में बसते थे। उनका व्यक्तित्व सादगी एवं निश्छलता से परिपूर्ण था। कुलपति ने कहा कि हमें शास्त्री और बापू से सीखना होगा कि बनावटीपन से कुछ नहीं होने वाला है। हम जो है वही दिखें। बापू को यदि लगता था कि उन्होंने किसी को ठेस पहुंचाई है तो प्रायश्चित करते थे, उपवास करते थे और सबक सीखते थे लेकिन आज हम अपने में क्या हैं? हमें अपनी गलतियों को स्वीकारना चाहिए। दूसरों की कमियों को न देखें, अपने अन्दर की कमियों को सुधारें। कुलपति ने कहा कि गांधी का सम्मान भारत ही नहीं पूरे विश्व में हैं लेकिन हम उनके देश में ही रहकर उनके विचारों से दूर होते चले जा रहे हैं। हमें उनके विचारों पर चलना होगा। कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि बापू एवं शास्त्री के आदर्शों पर चल कर ही समाज और देश का भला होगा।

कार्यक्रम में कुलपति प्रो0 सिंह ने शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शपथ दिलाई। रघुपति राघव राजा राम एवं वैष्णव जन को..... जैसे भजनों को गाकर विश्वविद्यालय परिवार ने महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के जीवन आदर्शों के प्रति आभार व्यक्त किया और जीवन आदर्शों को आत्मसात करने के लिए अपील भी की।

इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, वित्त अधि–कारी धनंजय सिंह, उपकुलसचिव विनय कुमार सिंह, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 एम0पी0 सिंह, प्रो0 जसवंत सिंह, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 एस0एन0 शुक्ल, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 के0के0 वर्मा, प्रो0 आशुतोष सिन्हा, प्रो0 एस0एस0 मिश्र, प्रो0 आर0 के0 सिंह, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ल, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, डॉ0 राजेश सिंह, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ल, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा, प्रो0 अनूप कुमार, प्रो0 रमापित मिश्र, डॉ0 विनोद चौधरी, राजेश पाण्डेय, राजेश सिंह सहित अन्य उपस्थित रहे।

मंथन

15 अक्टूबर, 2020: अधिक मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, विक्रम संवत् 2077

"अनुमान गलत होते हैं, अनुभव नहीं।"

डिजिटल टेक्नोलॉजी एवं शिक्षण संस्थान

वर्तमान में आर्टिफिशियल इंटेलीजेस, रोबोटिक्स, बिग डेटा और इंटरनेट आफ थिंग्स शिक्षा क्षेत्र के नए संसाधन हैं। इन नए संसाधनों का सीधा संबंध रोजगार और उद्योग से होने के कारण इनमें दक्षता आज के समय की प्रथम जरूरत है। इसी वजह से शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल क्रांति की आवश्यकता है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि पठन–पाठन में नए संसाधन का समुचित ढंग से उपयोग किया जाए। शिक्षकों के पास अनुभव की कमी नहीं है परन्तु वक्त के साथ परिवर्तित एवं परिवर्द्धित टेक्नोलॉजी को अपनाकर शिक्षण कार्य को सामयिक और उपयोगी बनाया जा सकता है। शिक्षकों को भी तकनीकी अनुप्रयोगों का उपयोग करने के प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो संज्ञानात्मक सीखने की क्षमताओं में सहायता करते हैं। इसे आकर्षक और दिलचस्प बनाने के लिए शिक्षक–छात्र की बातचीत एक प्रयोजनपरक दृष्टिकोण पर आधारित होनी चाहिए। इस तरह शिक्षण संस्थान डिजिटल कौशल की वर्तमान जरूरी कार्यबल को बनाए रखने और डिजिटल युग की मांग को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उद्योगों की जरूरत को शिक्षण संस्थानों द्वारा ही पूरित किया जा सकता है। लेकिन शिक्षण संस्थानों को उद्योगों की जरूरतों की परख करके अपने पाठ्यचर्या में शामिल करके वर्तमान एवं भविष्य के लिए युवाओं को शिक्षित एवं प्रशिक्षित किया जा सकता है। डिजिटल तकनीक का उपयोग और नए तरीके अपनाने का उद्देश्य छात्रों को शिक्षा प्रक्रिया में जोड़ कर रखना है। आज के दौर में उच्च शिक्षा संस्थान सीखने के अधिक व्यक्तिगत तरीके की ओर बढ़ रहे हैं। इसलिए भविष्य के स्वरोजगार की स्थिति के लिए स्नातकों को तैयार करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालयों के डिजिटल विकास के साथ कुछ पारंपरिक प्रक्रियाओं में बदलाव भी जरूरी हैं। आज दुनिया के 91 प्रतिशत से अधिक छात्र कोरोना वायरस महामारी से प्रभावित हुए हैं। शिक्षा पर यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार, संक्रमण का प्रसार रोकने के लिए कोविड–19 से प्रभावित कई देशों में स्कूल और उच्च शिक्षण संस्थान बंद कर दिए गए हैं। इससे 191 देशों में 157 करोड़ से अधिक छात्र प्रभावित हुए हैं। लॉकडाउन के कारण भारत में भी लगभग 32 करोड़ से अधिक विद्यार्थी प्रभावित हुए हैं।

ऑनलाइन शिक्षा का सबसे जटिल कारक है इंटरनेट कनेक्टिविटी। इसलिए मजबूत इंटरनेट कनेक्टिविटी सुनिश्चित करनी होगी ताकि सीखने की प्रक्रिया में कोई बाधा न आए। लॉकडाउन के दौरान देशभर के स्कूलों और कॉलेजों में ऑनलाइन शिक्षा में वृद्धि हुई है। हालांकि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के छात्रों में आनलाइन शिक्षण का उपयोग एवं दक्षता अलग–अलग है।

भारत की अमूल्य धरोहर हैं डॉ0 अब्दुल कलाम

स्वाति खरे

अबुल पकिर जैनुलअबिदीन अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम में एक साधारण परिवार में हुआ। वे पढ़ाई में एक सामान्य विद्यार्थी थे लेकिन जिज्ञासु होने के कारण उनमें हमेशा कुछ न कुछ नया सीखने की ललक रहती थी। रामेश्वरम से मैट्रिक और तिरुचिरापल्ली से भौतिक विज्ञान में स्नातक करने बाद उन्होंने मद्रास से ऐरोस्पेस इंजीनियरिंग की शिक्षा पूरी की।

डॉ० कलाम ने 1958 में अपने कॅरियर की शुरुआत रक्षा अनु–संधान एवं विकास संगठन से की जिसके पश्चात वे शीघ्र ही भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन से जुड़ गए। इसरो में उन्होंने परियोजना निदेशक के पद पर काम करते हुए पहले उपग्रह प्रक्षेपण यान और गुरूत्वीय उपग्रह प्रक्षेपण यान के निर्माण और प्रक्षेपण में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया।

डॉ० कलाम के कुशल नेतृत्व और निर्देशन में ही अग्नि, पृथ्वी आदि मिसाइलों का सफल प्रक्षेपण सम्भव हुआ और यहाँ से भारत ने रक्षा और परमाणु अनुसंधान के पृष्ठ पर स्वर्णिम इतिहास गढ़ना शुरु कर दिया। कलाम को मिसाइल मैन की उपाधि से अलंकृत किया गया। अब्दुल कलाम 1998 पोखरण परमाणु हथियार परीक्षण के जनक बने। वे भारत सरकार में कैबिनेट मिनिस्टर स्तर के वैज्ञानिक सलाहकार थे, तत्पश्चात 2002 में वे सर्वसम्मति से राष्ट्पति के पद पर आसीन हुए। 2012 में डा० कलाम ने 'व्हॉट कैन आई गिव' कार्यक्रम की नींव रखी, जिसके लिए वे देश भर में बच्चों और युवाओं से मिले और उनकी चेतना जागृत करने हेतु संगोष्ठियां भी आयोजित कीं। उनका मानना था कि राष्ट्र सही मायनों में तभी विकास कर पायेगा जब हमारे नागरिक राष्ट्र से अपेक्षा कम करने की बजाए समाज को कुछ वापस देंगें और इसकी नींव बचपन से ही डालनी चाहिए। इसलिए उन्होंने बच्चों से ही सीधे संवाद साधा।

अपनी आत्म कथा "माई जर्नी" में वे अपने कॅरियर के शुरुआती दिनों को याद करते हुए कहते है "जीवन के वे दिन काफी कसमसाहट भरे थे, एक तरफ विदेशों में शानदार कॅरियर था तो दूसरी तरफ देश–सेवा का आदर्श । बचपन के सपनों को सच करने का अवसर का चुनाव करना कठिन था कि आदर्शों की ओर चला जाये या मालामाल होने के अवसर को गले लगाया जाये। लेकिन मैंने तय किया कि पैसों के लिए विदेश नहीं जाऊंगा। इस तरह 1958 में मैं डी. आर. डी. ओ. से जुड़ गया ।" वैज्ञानिक होते हुए भी उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक कलात्मकता भी उल्लेख–नीय है जो पाठकों के हृदय तक उतर जाती है और उन्हें जागृत करने में सक्षम है। इसमें से विंग्स ऑफ फायर ', 'इण्डिया 2020 ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम', तथा 'इग्नाटिड माइंड्स अनलीशिंग द पॉवर विदिन इंडिया' ने बहुत से पाठकों को प्रेरित किया। जब उनसे पूछा गया कि वे अपने को किस रूप में याद किया जाना पसंद करेंगे? भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति, सफल वैज्ञानिक या सफल शिक्षक, तब उन्होंने झट से कहा सफल शिक्षक के अतिरिक्त और कुछ भी उनको संतुष्टि प्रदान नहीं करता क्योंकि सफल शिक्षक ही एक सफल नागरिक बनाने की क्षमता रखता है। शिक्षक ही शिक्षित समाज का कर्णधार है। यही कारण था कि वे अपने जीवन के अंतिम वर्षों में भी आई० आई० टी० और आई० आई० एम० संस्थानों से गेस्ट फैकल्टी के तौर पर जुड़ गए थे।

उनका कहना था कि इंसान को कठिनाइयों की आवश्यकता होती है, क्योंकि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये जरूरी है। वे तो एक लडाकू पायलट बनना चाहते थे लेकिन असफल होने के बाद भी वे निरंतर प्रयास करते रहे और अपना सपना मिसाइल और आधुनिक सैटेलाइट बनाकर पूरा किया। वे कहते हैं कि जिंदगी और समय, विश्व के दो सबसे बड़े अध्यापक है। जिंदगी हमें समय का सही उपयोग करना सिखाती है जबकि समय हमें जिंदगी की उपयोगिता बताता है।

शांति और विकास को समर्पित है संयुक्त राष्ट्र

अभिषेक गुप्ता

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व में शांति एवं स्थायित्व के विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र की स्थापना की गई। प्रारंभ में इस संगठन में 51 देश थे, लेकिन आगे चलकर इस संगठन का महत्व बढ़ता गया और वर्तमान में 193 देश इसमें शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र की स्थापना का उद्देश्य विश्व में शांति एवं स्थिरता का विकास, आर्थिक विकास व राजनीतिक स्थिरता और मानवाधिकारों की रक्षा आदि करना है। वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र ने गरीबी, भुखमरी, शरणार्थी समस्या, मानव व ड्रग तस्करी को रोकना एवं अशिक्षा को दूर करने का कार्य संयुक्त राष्ट्र संघ अपने सदस्य देशों के सहयोग से कर सका है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 24 अक्टूबर 1945 को की गई, तब से लेकर वर्तमान में समय–समय पर इसने अपनी प्रामाणिकता को सिद्ध किया है। संयुक्त राष्ट्र में समय–समय पर कमजोर देशों के किए आवाज उठाई गयी, जिसके परिणाम स्वरुप विश्व के अनेक देशों द्वारा उन्हें सहयोग मिला। संयुक्त राष्ट्र में सेना के गठन का प्रावधान भी किया गया है, इसने शान्ति सेना के माध्यम से कई अशांत क्षेत्रों में शांति की स्थापना कर, वहां पर लोकतांत्रिक ढांचे की स्थापना की है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सतत विकास लक्ष्य 2030 को घोषित कर पूरे विश्व में समावेशी विकास को बढ़ावा देने का कार्य किया है, ताकि विश्व में शांति–स्थिरता एवं विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके।

संयुक्त राष्ट्र के कारण ही आज विश्व के अनेक भागों में शांति एवं स्थिरता का विकास हो सका है। वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र में 193 देश इसके पूर्ण सदस्य हैं, इनमें से अमेरिका, रूस, फ्रांस, ब्रिटेन व चीन को वीटो पावर का अधिकार प्राप्त है। वीटो पावर के मायने हैं, "कि यदि सदस्य देशों के 192 देशों ने मिलकर कोई निर्णय कर लिया है और 5 वीटो पावर देशों में से कोई एक ने उस पर असहमति जता दी, तो वह निर्णय लागू नहीं किया जा सकता"। आज विश्व के कई देश लगातार इस बात की मांग कर रहे हैं, कि संयुक्त राष्ट्र में सुधार किया जाए ताकि इसके लोकतांत्रिक स्वरूप को स्थापित कर इसकी प्रासंगिकता को सिद्ध किया जा सके।

वर्तमान परिदृश्य में संयुक्त राष्ट्र संघ शक्तिशाली देशों के विरुद्ध अपनी सार्थकता को सिद्ध नहीं कर सका है। संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्य उद्देश्य विश्व में युद्ध को रोकना, मानव अधिकारों की रक्षा, सामाजिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, जीवन स्तर सुधारना और बीमारियों से लड़ना है।

देश की एकता के सूत्रधार हैं सरदार पटेल

अंकिता श्रीवास्तव

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्मदिन 31 अक्टूबर को हर वर्ष एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिवस पहली बार 2014 में मनाना शुरू किया गया। सरदार पटेल एक प्रतिष्ठित अधिवक्ता और राजनेता थे, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता और भारतीय गणराज्य के स्थापना में अग्रणी सेनानी रहे।

सरदार पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात में हुआ था। लंदन जाकर सरदार पटेल ने बैरिस्टर की पढ़ाई की और वापस अहमदाबाद आकर वकालत करने लगे। सरदार पटेल ने उच्च शिक्षा प्राप्त की थी लेकिन उनमें किंचित भी अहंकार नहीं था। वे स्वयं कहा करते थे 'मैंने कला या विज्ञान के विशाल गगन में ऊंची उड़ान नहीं भरी, मेरा विकास कच्ची झोपड़ियों में गरीब किसान के खेतों की भूमि और शहरों के गंदे मकानों में हुआ है"। पढ़ाई पूरी होने के बाद गांधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने भारत की स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। स्वतंत्रता आंदोलन में सरदार पटेल का पहला और बड़ा योगदान 1918 में खेड़ा संघर्ष में था। इसके बाद उन्होंने 1928 में हुए बारदोली सत्याग्रह में किसान आंदोलन का सफल नेतृत्व किया। महात्मा गांधी की अहिंसा की नीति ने सरदार पटेल को बहुत प्रभावित किया। इसीलिए बापू द्वारा किए गए सभी स्वतंत्रता आंदोलनों में सरदार पटेल की मुख्य भूमिका थी।

देश की स्वतंत्रता के पश्चात् सरदार वल्लभभाई पटेल उप प्रधानमंत्री के साथ प्रथम गृह, सूचना तथा रियासत विभाग के मंत्री बने। 562 छोटी–बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में एकीकरण कर भारतीय एकता का निर्माण करना सरदार पटेल की महानतम देन थी। यह भारत की रक्तहीन क्रांति थी। भारत के एकीकरण में उनके महान योगदान के लिए महात्मा गांधी ने उन्हें लौह पुरुष की उपा–धि दी थी। सन् 1950 में सरदार पटेल का देहांत हो गया। भारत के राजनीतिक एकीकरण और 1947 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान गए मंत्री के रूप में उन्होंने कार्य किया। गृह मंत्री के रूप में वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय नागरिक सेवाओं (आई.सी.एस) का भारतीयकरण कर इन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवाएं (आई.ए.एस) बनाया। सरदार पटेल में कौटिल्य की कूटनीतिज्ञता तथा महाराज शिवाजी की दूरदर्शिता थी। गुजरात में सरदार पटेल को लौह से निर्मित एक स्मारक समर्पित है, जिसका नाम "एकता की मूर्ति" (स्टैच्यू ऑफ यूनिटी) है। यह विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा है।

सन 1991 में मरणोपरान्त भारत रत्न से सरदार पटेल को सम्मानित किया गया। किसी भी देश का आधार उसकी एकता और अखंडता में निहित होता है और सरदार पटेल तो देश की एकता के सूत्रधार थे। राष्ट्र के प्रति उनके समर्पण को सदैव याद किया जाएगा।

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति विश्वविद्यालय परिसर की गतिविधियों का दर्पण है। लोकनायक जयप्रकाश नारायण और महात्मा गांधी पर लेख ज्ञानवर्द्धक रहे।

–प्रांजलि अस्थाना

सुविचार

सत्य बिना जन समर्थन के भी खड़ा रहता है, वह आत्मनिर्भर है।

–महात्मा गांधी

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 रवि शंकर सिंह, कुलपति
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादक मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
संकलन एवं सम्पादन
रजनीश, सौरभ एवं साक्षी

Feedback

avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

विद्यार्थियों को सीखने के लिए एक नया परिवेश निर्मित होगाः कुलपति

18 सितंबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय एवं रोटरी क्लब फैजाबाद के संयुक्त तत्वावधान में नई शिक्षा नीति 2020 विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया।

वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि नई शिक्षा नीति से देश आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ेगा। प्राथमिक स्तर से लेकर के उच्च शिक्षा तक नई शिक्षा नीति का लाभ मिल सकेगा। भारत के आत्मनिर्भर होने की दिशा में नई शिक्षा नीति अपनी प्रमुख भूमिका का निर्वहन करेगी। देश की नई शिक्षा नीति में सीखने पर व्यापक फोकस किया गया है। इसमें विद्यार्थियों को सीखने के लिए एक नया परिवेश निर्मित होगा।

नई शिक्षा नीति में स्थानीय भाषा पर बल दिया गया है : प्रो0 त्रिपाठी

वेबिनार के मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी नेशनल ट्राइबल यूनिवर्सिटी, अमर–कंटक के कुलपति प्रो0 श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी ने कहा कि नई शिक्षा नीति में विद्यार्थियों को सीखने की तरफ ले जाने का उद्देश्य है। भारत के विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने के लिए उन्हें प्राथमिक स्तर से सीखने पर जोर दिया गया है जिससे उनके अन्दर परिवेश का निर्माण हो सकेगा। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति में स्थानीय भाषा को पढ़ाने पर बल दिया गया है। इसके पीछे का उद्देश्य यही है कि व्यक्ति स्थानीय भाषाओं एवं आवश्यकताओं के बहुत करीब होता है इस कारण स्थानीय भाषा में सीखने में काफी मदद मिलती है।

वेबिनार में विशिष्ट अतिथि के रूप में दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर, के प्रो0 अजय शुक्ला ने बताया कि कि भारत एक विविधता वाला देश है नई शिक्षा नीति से विद्यार्थियों में अद्भुत क्षमता का विकास होगा। नई शिक्षा नीति में भारत शिक्षा के क्षेत्र में आत्म. निर्भर हो, उसका व्यापक लाभ युवाओं तक पहुंचे, पर ध्यान दिया गया है। स्थानीय भाषाओं एवं मातृभाषा पर विशेष जोर नई शिक्षा नीति में दिया गया है। टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेज के पूर्व निदेशक अब्दुल शाबान ने बताया कि नई शिक्षा नीति से भारतीय विद्यार्थियों के लिए नए अवसरों का निर्माण होगा, इससे वह सीखने की ओर बढ़ेंगे। नई शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य शत प्रतिशत शिक्षा की ओर देश को ले जाना है। लखनऊ विश्वविद्यालय के आई0क्यू0ए0सी0 के निदेशक प्रो0 राजीव मनोहर ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति लगभग 34 वर्षों बाद देश को प्राप्त हुई है। इसके लागू होने से कुछ ही वर्षों में इसके सुखद परिणाम विद्यार्थियों एवं समाज को मिलने लगेंगे। शोध के क्षेत्र में व्यापक बदलाव कर शोध को कई मानकों से जोड़ा गया है। इससे विद्यार्थियों में सीखने एवं नए अन्वेषण को प्राप्त करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा।

वेबिनार में रोटरी क्लब डिस्ट्रिक्ट गवर्नर के0के0 श्रीवास्तव ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के समन्वयक प्रो0 एस0एन0 शुक्ल ने कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। वेबिनार का क्लोजिंग रिमार्क रोटरी क्लब के मयूरेश चतुर्वेदी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का संचालन सह समन्वयक डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव ने की। धन्यवाद ज्ञापन रोटरी क्लब के साजन अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

रिपोर्टिंग में सावधानी बरतने की जरुरत है : डॉ0 कपूर

20 सितम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग एवं डेटा लीडस् संस्था, नई दिल्ली के संयुक्त संयोजन में फैक्ट एंड फिट के तहत "स्वास्थ्य सम्बन्धी भ्रामक सूचनाओं की जांच के लिए फैक्ट चेक" विषय पर कार्यशाला आयोजित हुई।

कार्यशाला के मुख्य वक्ता प्रधान वैज्ञानिक, विज्ञान प्रसार, नई दिल्ली के डॉ0 निमिष कपूर ने बताया कि आज स्वास्थ्य सम्बन्धी शोध पत्रों, विशेष रूप से कोविड–19 से जुड़े शोध पर रिपोर्टिंग के लिए पत्रकारों को सावधानी बरतने की जरुरत है। उन्होंने बताया कि शोध की रिपोर्टिंग करने से पूर्व शोध पत्रिका का इम्पैक्ट फैक्टर, शोध–पत्र की जांच करना अति आवश्यक है। समय समय पर रैण्डमाइज क्लीनिकल ट्रायल की जांच भी करनी जरूरी है। भारत सरकार के आयुष मंत्रालय ने एक आयुर्वेदिक औषधि को कोविड की औषधि मानने से इंकार कर दिया था और उसे रोग–प्रतिरोधी औषधि के रूप में स्वीकृत किया था।

डॉ0 निमिष ने प्रतिभागियों को बताया कि फैक्ट चेकिंग में हेल्थ एनालिसिस एशिया, बूम लाइव, आल्ट न्यूज एवं विश्वास न्यूज से सत्यापन में सहायता मिलती है। इसके साथ ही उन्होंने स्वास्थ्य सम्बन्धी झूठी जानकारियों, अफवाहों, भ्रामक व तोड़–मोड़ के बनाई गई खबरों, फोटो, वीडियो और स्रोत की जांच के लिए गूगल रिवर्स इमेज सर्च, इनविद सॉफ्टवेयर सहित कई टूल्स का प्रयोग करते हुए पीपीटी के माध्यम से प्रशिक्षण दिया। छात्रों के प्रश्नों व जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

विभाग के समन्वयक व कार्यशाला के संयोजक डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी ने संचालन करते हुए बताया कि कोविड–19 की वजह से सोशल मीडिया एवं अन्य माध्यमों में भ्रामक सूचनाओं एवं खबरों की भरमार हो गई है। आज कौन सी खबर सही है कौन सी नहीं, इसे पहचानना हम सभी के लिए एक बड़ी समस्या बन गई है। इस कार्यशाला का प्रयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के मार्गदर्शन में पत्रकारिता के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण कराना है। इस कार्यशाला में गूगल न्यूज इनिशिएटिव इंडिया के विश्व–व्यापी फैक्ट चेक कार्यक्रम फैक्ट एंड फिट, हेल्थ फैक्ट चेकिंग इंडिया ट्रेनिंग नेटवर्क द्वारा ऑनलाइन फैक्ट चेक टूल्स पर प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यशाला के आयोजन सचिव डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा ने अतिथि के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए स्वास्थ्य सम्बन्धी फैक्ट चेक एवं वैज्ञानिक रिपोर्टिंग की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ0 कुशवाहा ने बताया कि इस आपदा में खबरों की विश्वसनीयता बनाये रखना जरूरी है। भ्रामक खबरों से बचने की सलाह दी।

कार्यशाला में सहसंयोजक डॉ0 आर0एन0 पाण्डेय एवं डॉ0 अनिल विश्वा सहित विभाग की छात्र–छात्राएं ऑनलाइन जुड़े रहे।

विश्वविद्यालय में मनाया गया अन्तरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस

अयोध्या। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के संत कबीर सभागार में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर अन्तर– राष्ट्रीय अहिंसा दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अयोध्या टीएलएम हॉस्पिटल एवं कुष्ठ आश्रम के प्रिंसिपल बीनो बेरी तथा आए हुए कुष्ठ आश्रम के लोगों को स्मृति चिन्ह, पुष्पगुच्छ एवं फल देकर कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने सम्मानित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कुष्ठ रोगियों के प्रति स्नेह व सेवाभाव रखते थे। उन्होंने बताया कि बापू ने कुष्ठ रोगियों की सेवा कर यह सन्देश दिया कि कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों की सेवा करने से या उनके पास रहने से यह बीमारी नहीं फैलती। कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि बापू के अहिंसा की सीख को आज भी पूरी दुनिया में सम्मान के साथ याद करती है और उसका व्यापक रूप से पालन भी किया जा रहा है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के अधिकारों के लिए संघर्ष के दौरान स्व–शुद्धिकरण और सत्याग्रह से शुरू उनके प्रयोग ने दुनिया को अहिंसा के रूप में प्रतिरोध का सबसे शक्तिशाली और कारगर हथियार दे दिया है।

कार्यक्रम में कुलसचिव उमानाथ ने बताया कि आज भ्रष्टाचार से संलिप्त परिवेश में यदि हम इन महापुरुषों के आदर्शों पर चले तो निश्चित ही हम अपने जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं। विश्वविद्यालय के मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने बताया कि बापू कहते थे कि अहिंसा एक दर्शन है, एक सिद्धांत है और एक अनुभव है जिसके आधार पर समाज को बेहतर बनाया जा सकता है। कार्यक्रम में एम0बी0ए0 विभाग के प्रो0 शैलेंद्र वर्मा ने महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री के जीवन शैली पर प्रकाश डालते हुए जीवन में सत्य एवं अहिंसा के मार्ग पर चलने को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में आई0ई0टी0 के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्रा ने अतिथियों का पुष्पगुच्छ एवं रामनामी भेंटकर स्वागत किया। कार्यक्रम की रूपरेखा पर राजीव कुमार ने बताया ऑनलाइन माध्यम से क्विज एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका परिणाम भी घोषित कर दिया गया है। कोविड–19 के दृष्टि छात्र–छात्राओं को बाद में कुलपति प्रो0 सिंह द्वारा सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन मनीषा यादव द्वारा किया गया।

एनएसएस सर्टिफिकेट ऑनलाइन मिलेगा

02 अक्टूबर। राष्ट्रीय सेवा योजना के सर्टिफिकेट को ऑनलाइन प्रदान करने का शुभारम्भ डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के द्वारा किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के सर्टिफिकेट को ऑनलाइन जारी करने वाला प्रदेश का यह पहला विश्वविद्यालय है। कुलपति ने बताया कि ऑनलाइन प्रमाण–पत्र के तहत अब विश्वविद्यालय छात्र–छात्राओं को फोटोयुक्त डिजिटल सिग्नेचर एवं सिक्योरिटी फीचर सहित प्रमाण पत्र निर्गत करेगा। इसकी सुविधा हो जाने से छात्र–छात्राओं का क्यू0आर0 कोड के माध्यम से ऑनलाइन सत्यापन आसानी से किया जा सकेगा। इससे राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों का एक डेटाबेस तैयार करने में सुविधा मिलेगी। विश्वविद्यालय से सम्बद्ध सभी महाविद्यालयों में जहां पर सेवायोजन के कैंप संचालित किए जाते हैं उन सभी संस्थानों को इस सुविधा का लाभ मिल सकेगा। राष्ट्रीय सेवा योजना के 11000 सर्टिफिकेट ऑनलाइन छात्र–छात्राओं को उपलब्ध कराया जाना है। इस फीचर को भविष्य में जरूरत होने पर अपग्रेड किया जाएगा।

ऑनलाइन सर्टिफिकेट का सॉफ्टवेयर विश्वविद्यालय के ईडीपी प्रभारी रवि मालवीय एवं सेवा योजना के पूर्व समन्वयक डॉ0 समीर सिन्हा एवं गिरीशचन्द्र पंत के द्वारा छात्र–छात्राओं की सुविधाओं के दृष्टिगत तैयार किया गया है।

नए सत्र से आवासीय परिसर में नए पाठ्यक्रमों का होगा शुभारम्भ

01 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह की अध्यक्षता में परिसर के विभागों के रिस्ट्रक्चरिंग के सम्बन्ध में एक बैठक आहूत की गई।

बैठक में कुलपति प्रो0 सिंह ने समस्त संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों, निदेशकों एवं समन्वयकों को अवगत कराया कि परिसर में सत्र 2021–22 से नये पाठ्यक्रम संचालित किए जाने हैं। बैठक में कुलपति ने बताया कि फैकल्टी ऑफ आर्ट्स एण्ड ह्यूमिनिटी के तहत एम0ए0 फिलॉसफी एण्ड रिलीजन, एम0ए0 साइकोलॉजी, एम0एम0 सोशियोलॉजी के प्रस्ताव पर सहमति बनी।

बैठक में इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजूकेशन स्पोर्टस एण्ड यौगिक साइंस के तहत भाषा विज्ञान में सेंटर ऑफ यूरोपियन लैग्वेज में फ्रेंच, जर्मन एवं रसियन, सेंटर फॉर एशियन लैग्वेज कोरियन, जापानी, चाइनीज में स्नातक डिप्लोमा तथा सेंटर फॉर संस्कृत के तहत पाली एवं प्राकृत में एम0ए0 पाठ्यक्रम एवं सेंटर फॉर रीजनल लैग्वेज में अवधी एवं भोजपुरी में डिप्लोमा प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त एम0ए0 इन स्ट्रैटेजिक साइंसेज एवं एम0ए0 इन इन्टर–नेशनल रिलेशन पाठ्यक्रम भी खोले जाने हैं।

बैठक में फैकल्टी ऑफ साइंस के तहत केमेस्ट्री, बॉट्नी, जूलॉजी में एम0एस0सी तथा इंस्टीट्यूट ऑफ अर्थ एण्ड इन्वायरनमेंटल साइंस के तहत जियोलॉजी एम0एस0सी0, जियो फिजिक्स में एम0एस0सी0 एव पी0जी0 डिप्लोमा इन रिमोट सेसिंग एवं जीआईएस, डिप्लोमा इन डिजास्टर मैनेजमेंट, फैकेल्टी ऑफ लॉ के तहत पांच वर्षीय इंटीग्रेटेड कोर्स शुरू किए जाएंगे। फैकेल्टी ऑफ होम एवं न्यूट्रीशन साइंस में एम0ए0, एम0एस0सी0 एवं पी0जी0 डिप्लोमा संचालित किए जायेंगे।

बैठक में फैकल्टी ऑफ एजुकेशन के अर्न्तगत बी0एड0 पाठ्यक्रम के संचालन के लिए भी निर्णय लिया गया।

बैठक में कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने बताया कि परिसर के बिजनेस मैनेजमेंट एण्ड इंटरप्रेन्योरशिप का नाम परिवर्तित कर अब फैकल्टी ऑफ कामर्स एण्ड मैनेजमेंट के नाम से जाना जायेगा इस पर भी सहमति बनी। इसके साथ ही परिसर में दो केन्द्र स्थापित किए जायेंगे जिनमें सेंटर फॉर पापुलेशन, कम्यूनिटी हेल्थ एण्ड डेवलपमेंट तथा सरदार पटेल सेंटर फॉर नेशनल इंट्रीग्रेशन का नाम प्रस्तावित है।

बैठक में इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी के तहत बी0टेक में फूड एवं इंजीनियंरिंग एवं बी0 आर्किटेक्चर पाठ्यक्रम एवं इसी क्रम में इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंस के तहत बी0फार्मा एवं डी0फार्मा के पाठ्यक्रमों के प्रस्ताव पर विचार किया गया।

बैठक में कुलपति ने सम्बन्धित संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों, निदेशकों एवं समन्वयकों से 15 दिन की अवधि में पाठ्यक्रम सम्बन्धित प्रस्ताव प्रस्तुत करने को कहा है। जिससे सत्र 2021–22 से नये पाठ्यक्रम का संचालन किया जा सके।

बैठक में कुलसचिव उमानाथ, वित्त अधिकारी धनंजय सिंह, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 जसवंत सिंह, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 के0के0 वर्मा, प्रो0 आशुतोष सिन्हा, प्रो0 एस0एस0 मिश्र, प्रो0 आर0के0 सिंह, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ल, प्रो0 अनुपम श्रीवास्तव, डॉ0 त्रिभुवन शुक्ला, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, डॉ0 अशोक राय, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा, प्रो0 अनूप कुमार, प्रो0 तुहिना वर्मा, प्रो0 रमापति मिश्र, डॉ0 नरेश चौधरी, डॉ0 विनोद चौधरी, डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र, डॉ0 डीएन वर्मा, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 विनय मिश्र, उपस्थित रहे।

•अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन में 28 सितम्बर, 2020 को परिसर के नैक मूल्यांकन की समीक्षा के लिए एक बैठक आहूत की गई।

• अवध विश्वविद्यालय के आई0आई0टी0 में 15 सितम्बर 2020 को इंजीनियर्स–डे के अवसर पर संस्थान के इनोवेशन सेल द्वारा ऑनलाइन प्रोजेक्ट एग्जिबीशन का आयोजन किया गया।

•अवध विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों की बीएससी–एजी0 अंतिम वर्ष की मुख्य परीक्षा वर्ष 2020 का परीक्षाफल 12 अक्टूबर, 2020 को घोषित कर दिया गया।

•अवध विश्वविद्यालय के बीएससी पाठ्यक्रम में ई–ज्ञान के तहत 'जावा एवं उसके अनुप्रयोग' विषय पर 26 सितम्बर 2020 को एक वेब व्याख्यान का आयोजन किया गया।

नई शिक्षा नीति में शिक्षकों का दायित्व बेहद महत्वपूर्णः कुलपति

21 सितम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के संत कबीर सभागार में सोशल डिस्टेंसिंग के साथ नई शिक्षा नीति–2020 विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि नई शिक्षा नीति भारतीय सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं के काफी करीब है। इसका उद्देश्य राष्ट्र के निर्माण में ऐसे नागरिकों को तैयार करना है जो भारतीय संस्कृति के अनुरूप मौलिक चिंतन और शोध की दिशा में सार्थक योगदान कर सके। भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के उचित समन्वय के साथ नई शिक्षा नीति बड़े स्तर पर प्रतिभावान एवं योग्यतावान वर्ग को तैयार करने में सक्षम सिद्ध होगी। कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि नई शिक्षा नीति के समक्ष निश्चित रूप से अनेक चुनौतियां है जिसे जनजागरूकता के माध्यम से दूर करना है। नई शिक्षा नीति में शिक्षकों का दायित्व बेहद महत्वपूर्ण है जिसे बखूबी निर्वहन करना होगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख सुनील आम्बेकर ने नई शिक्षा नीति के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि वर्षों से चली आ रही लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति को समाप्त करने और भारतीय शिक्षा नीति को आत्मसात करने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि इस नई शिक्षा नीति से छात्रों को बहुत कुछ सीखने का अवसर मिलेगा। इसमें छात्रों की प्रतिभा निकल सामने आयेगी। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने वाला उत्तर प्रदेश देश का पहला राज्य बन गया है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का किसी भी राज्य सरकार ने विरोध नहीं किया है और सभी इसको लागू करने के लिए संकल्पित है।

विश्वविद्यालय के मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने सरकार द्वारा लागू नई शिक्षा नीति का स्वागत करते हुए इसे मील का पत्थर बताया। नई शिक्षा पद्धति में नैतिक मूल्यों पर अधिक फोकस किया गया है। माइक्रोबायोलॉजी के विभागाध्यक्ष प्रो0 शैलेंद्र कुमार ने कहा कि नई शिक्षा नीति आने वाले वाले समय में दूरगामी परिणाम देगी। यह छात्रों में स्किल डेवलपमेंट की सहायता से आत्मनिर्भर बनाने में सहायक सिद्ध होगी। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन आई0ई0टी0 के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र द्वारा किया गया। अतिथियो का स्वागत डॉ0 सुधीर प्रकाश एवं पारितोष त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर शिक्षक एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री मोदी के जन्म दिवस पर वृहद वृक्षारोपण

17 सितम्बर। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के नवीन परिसर में सोशल डिस्टेसिंग के साथ वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वृक्षारोपण कार्यक्रम में 101 पीपल के पौधे रोपित किये गये।

कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर नवीन परिसर में अधिकारियों एवं शिक्षकों के साथ पीपल के पौधे रोपित किए। उन्होने कहा कि इन पौधों के लगने से आने वाले समय में नवीन परिसर का वातावरण हरा–भरा और प्रदूषण मुक्त रहेगा। पीपल औषधीय गुणों से युक्त होता है। वनस्पति विज्ञान एवं आयुर्वेद में इसे फायदेमंद माना गया है। इसका हमारे पुराणों में भी विशेष महत्व है। ग्रीन समिति के सचिव डॉ0 विनोद चौधरी ने बताया कि यह वृक्षारोपण कार्यक्रम कुलपति प्रो0 सिंह के निर्देशन में किया गया है। सभी शिक्षकों को इसके पोषण की जिम्मेदारी प्रदान की गई है।

महामारी में सावधानी ही सुरक्षा कवच हैः कुलपति

10 अक्टूबर। कोविड–19 से बचाव के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर जन आन्दोलन अभियान के तहत विश्वविद्यालय के संत कबीर सभागार में शिक्षकों, अधिकारियों को एवं उसके उपरांत सरदार वल्लभ भाई पटेल भवन में कर्मचारियों को कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने सुरक्षा उपायों का अनुपालन की शपथ दिलाई।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय नई दिल्ली के द्वारा की गई अपील में सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता के तहत आगामी त्योहार एवं शीत ऋतु के दृष्टिगत कोरोना से बचाव के लिए एक अभियान चलाया जा रहा है। नये सामान्य उपयुक्त व्यवहार पर अपनाई जाने वाली सावधानियों के साथ अनलॉक का अनुपालन करने की आवश्यकता है। इसके तीन प्रमुख संदेशों के तहत मास्क पहनना, शारीरिक दूरी का अनुपालन, बार बार हाथ की साफ–सफाई करना जरूरी है। केन्द्र सरकार की अधिसूचना के अनुरूप इसमें व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए सतत् प्रयास किया जाना है। प्रो0 सिंह ने बताया कि कोविड–19 का संक्रमण मौसम में चल रहे परिवर्तन की वजह से बढ़ सकता है। इसके लिए सभी को सरकार द्वारा सुझाए गये महत्वपूर्ण उपायों को अपनाना चाहिए। कुलपति ने कहा कि भारत एक घनी आबादी वाला देश है। इस कारण यहां के नागरिकों को सर्तकता बरतना आवश्यक है। प्रो0 सिंह ने सभी शिक्षण–संस्थानों एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों से अपील की है कि कोविड–19 की गंभीरता को समझते हुए कदापि अनदेखा न करें। सभी को हर स्तर पर सावधानी बरतना आवश्यक है। महामारी में सावधानी ही सुरक्षा कवच है।

शपथ के उपरांत कुलपति प्रो0 सिंह ने कोरोना से बचाव के लिए पोस्टर जारी किया। जिसे परिसर के विभिन्न स्थानों पर लगाया जायेगा। कार्यक्रम का संचालन अधिष्ठाता छात्र–कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने किया।

आगामी सत्र से मिड एवं एंड सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली समाप्त

21 सितम्बर। अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन में आवासीय परिसर एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में संचालित मिड एवं एंड सेमेस्टर परीक्षाओं के सम्बन्ध में एक बैठक आहूत की गई। बैठक में कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने सभी संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, निदेशक एवं समन्वयक से परिसर एवं महाविद्यालयों में संचालित मिड एवं एंड सेमेस्टर परीक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की। कुलपति प्रो0 सिंह से सभी सदस्यों ने आग्रह किया कि मिड एवं एंड सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली समाप्त कर पूर्व की भांति सेमेस्टर प्रणाली लागू की जाए। कुलपति प्रो0 सिंह ने आगामी सत्र से पूर्व की सेमेस्टर प्रणाली को लागू करने के लिए कुलसचिव उमानाथ को निर्देश प्रदान किया। बैठक में सदस्यों ने परिसर में संचालित समस्त सेमेस्टर पाठ्यक्रमों की परीक्षा एवं प्रश्न–पत्रों के निर्माण का दायित्व विभाग को देने की सिफारिश की और बताया कि इससे समय से पाठ्यक्रमों की परीक्षाएं कराई जा सकेगी। इस पर कुलपति प्रो0 सिंह ने सहमति प्रदान की। महाविद्यालयों की सेमेस्टर प्रणाली परीक्षाओं के लिए कुलपति प्रो0 सिंह ने परीक्षा नियंत्रक उमानाथ को अधिकृत किया।

स्वच्छता अभियान के लिए श्रमदान

10 अक्टूबर। नैक मूल्यांकन के दृष्टिगत मुख्य परिसर एवं आई0ई0टी में स्वच्छता अभियान के लिए शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने श्रमदान किया। कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने परिसर में झाड़ू लगाकर अभियान की शुरूआत की। इसके उपरांत कुलपति प्रो0 सिंह ने परिसर के विभिन्न विभागों का निरीक्षण किया। जिसमें केन्द्रीय पुस्तकालय, भौतिकी विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, इतिहास संस्कृति पुरातत्व, प्रचेता भवन, दीक्षा भवन के साथ आई0ई0टी0 संस्थान में शिक्षक एवं कर्मचारी प्रातः 7 बजे से 9 बजे तक साफ–सफाई एवं श्रमदान करते हुए दिखाई दिए। इस अवसर पर कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि शिक्षण संस्थानों में साफ–सफाई एक प्रमुख आवश्यकता है। समाज के लिए शिक्षण संस्थान एक आदर्श केन्द्र के रूप में होते है, इससे सकारात्मक संदेश समाज को मिलता है।

जागरूक महिला परिवार एवं राष्ट्र के विकास का कारक होती हैः कुलपति

08 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के वुमेन ग्रीवंस एण्ड वेलफेयर सेल द्वारा वुमेन इम्पावरमेंट एण्ड जेंडर जस्टिस इन इंडिया विषय पर एक दिवसीय वेबिनार का आयोजन कियां गया।

वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि महिलाओं के ऊपर होने वाले उत्पीड़न को रोकने के लिए सभी को मिलकर उन्हें सशक्त बनाना होगा। उनके अन्दर निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना ही महिला सशक्तीकरण है। कुलपति ने समाज की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि समाज ने महिलाओं को उपभोग का सामान समझा है। वर्तमान समय में टेलीविजन पर आने वाले विज्ञापन इस उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं।

कुलपति ने कहा कि महिलाओं पर हो रहे उत्पीड़न रोकने के लिए उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना होगा। किसी भी राष्ट्र को जगाने के लिए महिलाओं का जागरूक होना बहुत जरूरी है। जागरूक महिला अपने परिवार एवं राष्ट्र के विकास का कारक होती है। कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि महिलाओं को सशक्त एवं न्याय दिलाने में पुरूषों का योगदान किसी से कम नहीं रहा है। इसलिए पुरूषों को, महिलाओं के न्यायिक अधिकारों की जानकारी देना बहुत जरूरी है।

वेबिनार की मुख्य अतिथि एडवांस सेंटर फॉर वूमन स्टडीज, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की निदेशक प्रो0 अजरा मुशावी ने कहा कि किसी परिवार को चलाने के लिए पति एवं पत्नी की अहम भूमिका होती है। इन दोनों में सामजस्य नहीं है तो परिवार आगे बढ़ नहीं पाता है। उन्होंने महिला सशक्तीकरण पर बल देते हुए कहा कि समाज के सभी वर्ग राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभा सकते है। आज महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति शिक्षित होना बहुत जरूरी हैं। अगर महिलाएं शिक्षित नहीं होगी तो वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं हो सकती। प्रो0 मुशावी ने कहा कि आज समाज में महिलायें सुरक्षित नहीं है। जिस देश में महिलाएं सुरक्षित नहीं है तो हम उस राष्ट्र के नागरिक कहलाने के लायक नहीं है और हम राष्ट्र का विकास नहीं कर सकते हैं। डिसीजन मेकिंग पॉवर मिलेगा तो वे राष्ट्रीय आय में अपना योगदान कर पायेंगी। इसके लिए हमें नारी सशक्तीकरण पर संजीदगी से कार्य करना होगा।

प्रो0 अजरा ने बताया कि सिक्योरिटी, डिसीजन मेकिंग पॉवर एवं मोबिलिटी, ये तीनों ही महिला सशक्तीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वर्तमान समय में सरकार शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर फोकस कर रही है। इन दोनों से हम परिपूर्ण हो गए तो राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण भमिका अदा कर सकते हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की डॉ0 शिवांगी टण्डन ने कहा कि आज के समय में नारी सशक्तीकरण विषय बहुत अहम है। उनके लिए बहुत से कानून एवं नीतियां है। परन्तु उनके प्रति जागरूकता की कमी है। जेन्डर जस्टिस बहुत आवश्यक है। क्लास, कास्ट और जेन्डर तीनों बहुत जरूरी है। इन तीनों को साथ में लेकर चलना बहुत आवश्यक है। आज महिलाओं को अपने अधिकारों को जानने के लिए उनका जागरूक होना आवश्यक है।

वेबिनार की संयोजक प्रो0 तुहिना वर्मा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना है। अधिकारों की जानकारी न होने से उन महिलाओं को समाज में उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर महिला सशक्तीकरण के प्रति प्रतिबद्ध हैं।

वेबिनार का शुभारम्भ मां सरस्वती की वंदना एवं विश्वविद्यालय कुलगीत की प्रस्तुति के साथ किया गया। कार्यक्रम का संचालन आयोजन सचिव डॉ0 सिंधु सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन महिमा चौरसिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम माडरेटर मनीषा यादव एवं डॉ0 सरिता द्विवेदी रहीं। तकनीकी सहयोग पारितोष त्रिपाठी, राजीव कुमार एवं रमेश मिश्र ने प्रदान किया।

इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 अशोक शुक्ला, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 रमापति मिश्र सहित अलग–अलग प्रांतों से लगभग 450 लोग ऑनलाइन एवं यू–ट्यूब से जुड़े रहे।

पंडित दीनदयाल बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे : प्रो0 सिंह

25 सितम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन में पं0 दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर 'पं0 दीनदयाल उपाध्यायः कृतित्व व व्यक्तित्व' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के मुख्य नियंता एवं कला संकायाध्य –क्ष प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने कहा कि पं0 दीनदयाल उपाध्याय बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे उनके व्यक्तित्व में राष्ट्रवाद की अमिट छाप थी। वे एक विचारक, दार्शनिक, लेखक एवं पत्रकार थे। प्रारम्भ से ही भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित रहे।

कार्यक्रम के वक्ता एकात्मवाद मानव दर्शन प्रतिष्ठान, उत्तर प्रदेश के सहसंयोजक रवि तिवारी ने कहा कि एकात्मवाद एक अद्भुत परिकल्पना है। दीनदयाल राजनीतिक शुचिता के पक्षधर थे, प्रत्येक व्यक्ति को उनके जीवन–आदर्शों को अपनाना चाहिए। पं0 दीनदयाल उपाध्याय शोध–पीठ के समन्वयक प्रो0 आशुतोष सिन्हा ने बताया कि पं0 दीनदयाल उपाध्याय अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। जीवन भर कई अभावों के बावजूद उन्होंने अपने जीवन सिद्धांतों से समझौता नहीं किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ पं0 दीनदयाल उपाध्याय एवं मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके किया गया। धन्यवाद ज्ञापन प्रो0 राजीव गौड़ द्वारा किया गया। इस अवसर पर विभाग सेवा प्रमुख दुर्गा प्रसाद त्रिपाठी, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, डॉ0 अनिल कुमार, डॉ0 कृपाशंकर पाण्डेय, डॉ0 डी0एन0 वर्मा, डॉ0 मृदुला पाण्डेय, अनुराग सिंह, मनोज वर्मा, नवीन पटेल, डॉ0 दिलीप कुमार सिंह, सागर सिंह, नागेन्द्र, महेश सहित अन्य उपस्थित रहे।